जय राम जय राम
जय जय राम
राम राम राम राम
जय जय राम

सत्य साहित्य

New Series
Vol.2
No. 1
Jan 2014

Satya Sahitya, a Quarterly Newsletter of **Shree Ramsharnam International Centre**, New Delhi

सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

Let us sing the Omniscience of Shree Ram, the Supreme Soul,
who is the Fountainhead of all animate and inanimate energy of the cosmos

१५८

राम राम भजो मन मेरे, कलि कलेश मिट जावें तेरे

(1) राम नाम आधार बनाओ, सिमरो राम सदा सुख पाओ
राम नाम ~~रसना~~ राखो मन माहीं, नाम बिना दुःख
जावत नाहीं । नाम...
राम राम...

(2) राम नाम की धुन लगाओ
आप जपो औरों को जपाओ ।
राम नाम में लाओ प्रीत
व्यर्थ गई अरबला बीत - व्यर्थ...
राम नाम ...

(3) घट घट में है राम समाया,
(धन्य) धन्य धन्य जिन राम ध्याया ।
राम की सूरत मन में राखो,
राम नाम अमृत रस चाखो - राम नाम--
राम राम ...

(4) राम ही जिया जन्त के दाता,
राम ही पालन हारा-विधाता ।
जिन जिन भजा राम रघुराया,
तिन तिन प्रभु अविनाशी पाया - तिन--
राम राम ---

(परम पूज्य महाराज जी की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- नूतन वर्ष पर गुरुजनों का संदेश
- राम नाम की महत्ता
- प्रश्न-उत्तर
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- अनुभूतियाँ
- बच्चों के लिए
- 15 मार्च के सुअवसर पर
- स्वामी जी महाराज के संस्मरण
- कैलेण्डर 2014
- सत्य साहित्य के उद्देश्य और नियम

सत्य साहित्य

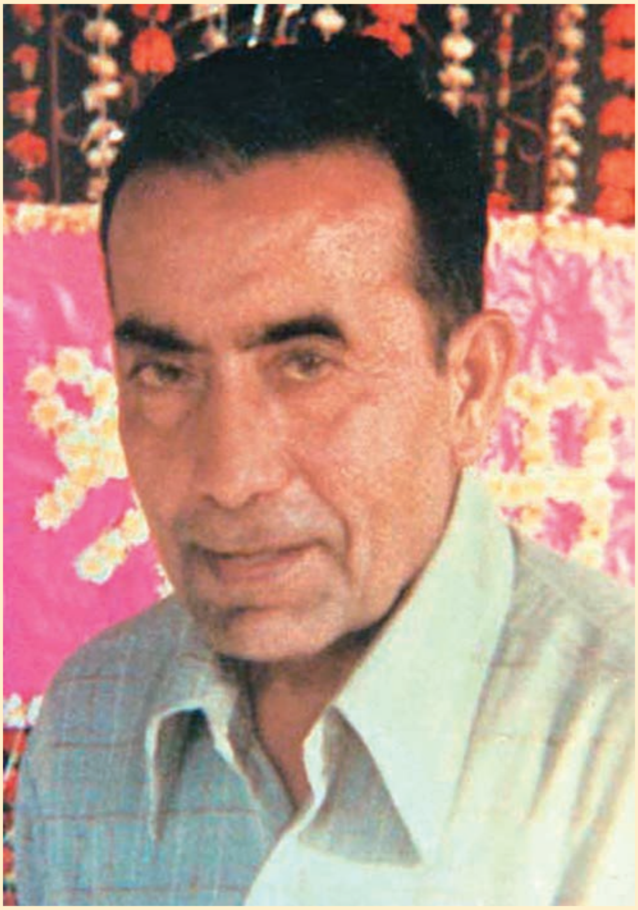

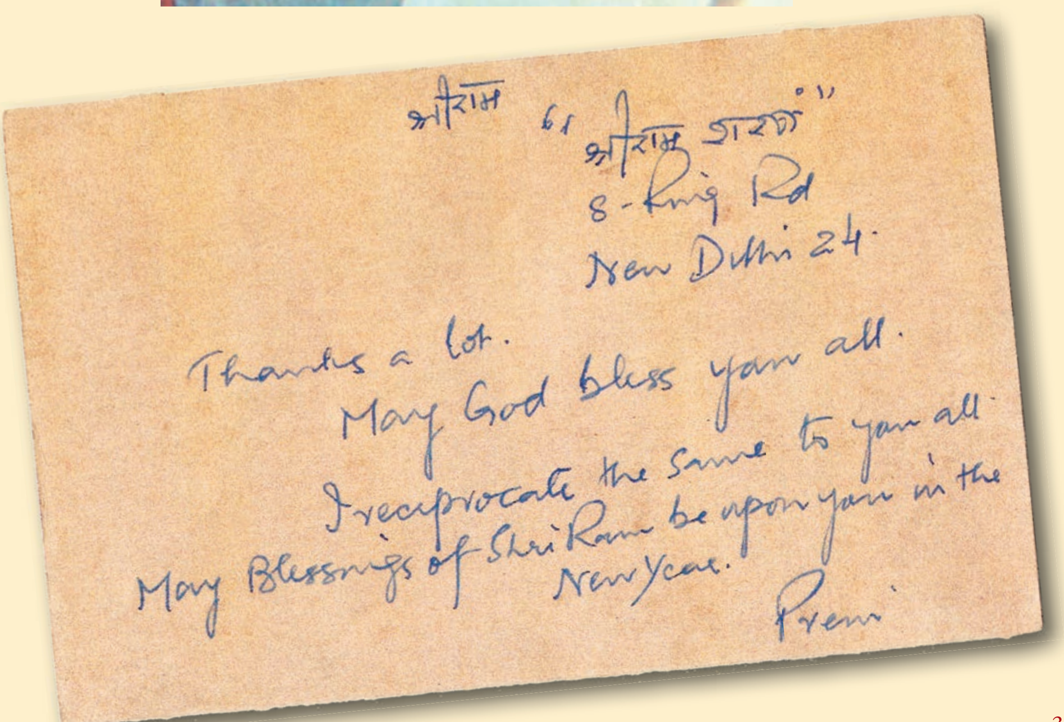

श्रीराम

“श्रीराम शरणं”
8-Ring Rd
New Delhi 24.

Thanks a lot.
May God bless you all.
I reciprocate the same to you all.
May Blessings of Shri Ram be upon you in the New Year.

Prem

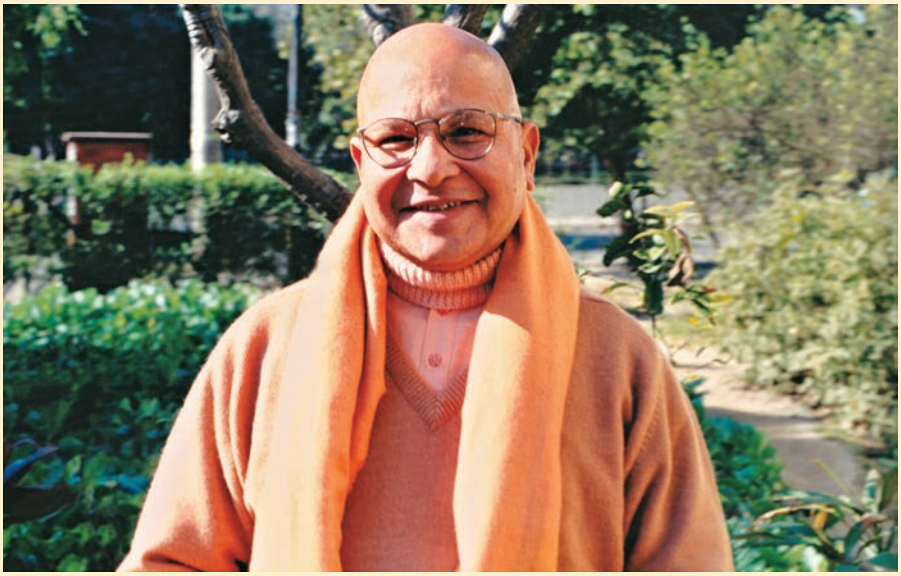

'नूतन वर्ष मंगलमय हो'

हम किसी भी दृष्टि से देखें, यह संदेह–रहित सत्य है कि वर्ष के बीतने से जीवन का एक और वर्ष कम हो गया। प्रत्येक व्यक्ति मृत्यु के और समीप हो गया। मृत्यु की ओर बढ़ते कदम अर्थात् सत्य की ओर बढ़ते कदम–क्यों ? जैसे परमात्मा सत्य है, वैसे मरण भी सत्य है। दोनों ही सतत् याद रखने योग्य–उसी में मानव का कल्याण है। वर्ष के शुभारम्भ होने से पूर्व एक व्यापारी अपना विगत लेखा–जोखा बंद करके नया खोलता है, पिछले की जाँच–पड़ताल करता है, परीक्षण–निरीक्षण करता है ताकि गत वर्ष में रही त्रुटियों की पुनरावृत्ति न हो। एक साधक का दृष्टिकोण भी ऐसा ही हो, वह भी देखे–आध्यात्मिक प्रगति हुई या अवगति ? कहाँ–कहाँ फिसला ? तदनुसार आगामी वर्ष की साधना का कार्यक्रम निर्धारित करे। कुछ एक प्रश्न अपने आपसे पूछने से निर्णय लेना सुगम हो जाएगा :

1. क्या 'राम–नाम' जाप निरन्तर होने लगा है ? यदि नहीं तो कहाँ–कहाँ अवरुद्ध होता है ? सतत स्मरण कहाँ भंग हो रहा है ?

2. क्या ध्यान का नियम निभ रहा है ? यदि हाँ, तो क्या आनन्द की अनुभूति हो रही है ? क्या मन का कुछ निर्मलीकरण हुआ ? क्या पूर्व पापों का बोझ कुछ हलका हुआ? फलतः क्या भजन–ध्यान में रुचि बढ़ी? क्या संसार की अपेक्षा राम अधिक प्रिय लगने लगा है ?

3. क्या घर संसार की छोटी छोटी घटनाएँ, मन को पूर्ववत् विचलित करती हैं या मन स्थिर रहता है? क्या प्रत्येक प्रतिकूल स्थिति में जाप बंद तो नहीं हो जाता ? कर्त्तव्य–पालन अर्थात् सेवा खंडित तो नहीं हो जाती ?

4. क्या मनोविकार काम, क्रोध एवं लोभ–मत्सर पहले जैसे ही परेशान करते हैं या विचारधारा में कुछ सुधार आया ? क्या अभिमान वैसे ही फुँकारे मारता है या कुछ शिथिल हुआ ? क्या परिणाम–स्वरुप सहनशीलता एवं नम्रता में वृद्धि हुई या नहीं ? क्या दूसरों की उन्नति देख, मन अभी भी पूर्ववत् ही जलता है–दुखी होता है या दाता याद आता है ?

5. क्या दूसरों का अनिष्ट सोचने या करने में, पर–निन्दा, चुगली, कटु वाणी प्रयोग में कुछ कमी हुई या नहीं ? क्या सबके प्रति सद्भावना एवं प्रेम के भाव जागृत हुए या नहीं ?

उत्तर पाने पर, नूतन वर्ष में दृढ़–संकल्प लेने की आवश्यकता है कि, 'नए साल में कौन–कौन से दुर्गुणों का त्याग करेंगे। आप का संकल्प संपूर्ण हो, सफल हो, राम–मंत्र आपको बल दे–मेरे गुरुजन सबको आशीर्वाद दें एवं प्रभु–राम सब पर कृपा करें। मेरी ओर से शुभ एवं मंगल–कामनाएँ व सबको हार्दिक बधाई।'

May God bless us all to live a meaningful year.

विश्वामित्र

(नववर्ष के आगमन पर परम पूजनीय श्री महाराज जी साधकों को शुभकामनाएं एवं संदेश दिया करते थे। प्रस्तुत संदेश वर्ष 2002 के अवसर पर दिया गया।)

राम नाम की महत्ता

परम पूजनीय, सदा स्मरणीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज को जब सन् 1925 में आध्यात्मिक पिपासा के कारण एकान्तवास की आन्तरिक प्रेरणा हुई, तब डलहौज़ी में, एक मास की कठोर साधना के उपरान्त उनको परमेश्वर से राम नाम का प्रसाद प्राप्त हुआ। आदेशात्मक शब्द आया 'राम भज, राम भज, राम राम'। जिस धाम से उनको राम नाम के प्रसाद की प्राप्ति हुई, उसकी महत्ता को समझ कर बहुत कृतज्ञतापूर्ण यथासम्भव विस्तार किया।

राम नाम देश व काल से सीमित नहीं है, परन्तु सर्वव्याप्त है। इसलिए स्वामी जी की साधना पद्धति नामयोग व ध्यानयोग की है जो बहुत ही सुगम व सहज, लाभदायक, शीघ्र सिद्धिकारी, अल्पकाल में ही आत्मा को जगा देने वाली है। नामयोग में साधक अपने परमेश्वर के समीप होता है। नाम जप से वह उसी अनन्त हरि का आवाहन करता है और समाधिकाल में उसी में लयता लाभ कर लेता है। परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज व परम पूजनीय श्री महाराज जी ने इस प्रसाद को परम पूजनीय स्वामी जी की भान्ति ही बिना भेदभाव के सबको बाँटा। धन्यभाग हमारे कि हम ऐसे पूर्ण सद्गुरुओं की शरण में हैं, जिन्होंने हमें मोक्ष, शान्ति प्राप्ति एवं प्रभु मिलन का ऐसा सुगम व सरल मार्ग बताया है।

'राम नाम में विश्वास'

जब किसी पर परमेश्वर की कृपा होती है तो उस मार्ग पर चलता है। परन्तु कई रुकावटें आने लगती हैं। संगति ऐसी मिलती है जो संशय पैदा करती है। कोई माला फेरता जा रहा था—संन्यासी मिला, उसने कहा,'यह क्या करते हो—माला की फाँसी तुम्हारे गले में पड़ी है।' उसने कहा,'मैं कोई पाप तो नहीं कर रहा' ऐसी कई बातें होती हैं। अपना विश्वास अटल होना चाहिए। कोई कितना भी कहे कि फलां साधु है—तेरे घर में औलाद नहीं, वहाँ जाने से मिल जाएगी। तेरे पास धन नहीं, वहाँ जाने से मिल जाएगा। मन में विचार आता है कि यह जो इतना तजुर्बाकार है, ठीक ही कहता होगा। मैं भी वहाँ जाकर जतन करूँ। कई लोग ज्योतिषियों के पास भी जाते हैं—वह बताते हैं कि पाठ करवाओ।

यह विश्वास होना चाहिए कि इससे—'राम नाम' से—बढ़कर कोई तरीका नहीं। वह स्वयं ही कृपा कर देंगे—यह विश्वास होना चाहिए कि वह पूर्ण कर देगा, उससे भटकने की ज़रुरत नहीं। अगर माँगे तो परमेश्वर से ही माँगे, गद्गद् होकर माँगो—माँग में रोना है—वह पूरी किया ही करते हैं।

निष्काम भक्ति—जब कोई कामना होती है—यदि वहाँ से पूर्ण नहीं हुई—तो विश्वास चाहिए कि कहीं से भी पूरी नहीं होगी—संशय आने नहीं देना—यह नीचे गिराता है।

पर अनुभव की बात है कि ज्योतिषी से जाकर पूछा,'मेरा विघ्न कब टलेगा?' ज्योतिषी ने कहा,'इस तरह टलेगा।' वहम में डाल दिया।

किसी ने कहा,'वह किसी समय अकारण कृपा कर सकता है तो अपने विश्वास को ढीला न होने दें। 'राम नाम' का आराधन किया कर—सब ठीक हो जाएगा।'

समय बीत गया तो वह निराश हुआ—'घबराने की कोई बात नहीं। परमेश्वर के घर में कोई कमी नहीं। तू अपने 'राम नाम' में मस्त होकर उसका आराधन कर।' परमेश्वर की कृपा हो गई—वह विघ्न सब टल गए। यह पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि वह सब पूर्ण करेंगे। माँगें तो परमेश्वर की कृपा ही माँगे—जैसे switch on करने से बत्ती जल जाती है इसी प्रकार आराधन करने वाले को तो यह विश्वास होना चाहिए कि कृपा अवतरित होगी।

परमेश्वर श्री राम हम सब तेरे दरबार में उपस्थित हैं—तेरे दरबार से और की ओर देखेंगे नहीं—यही विश्वास है। प्रार्थना है—तू और भी कृपा कर—तू अपनी प्रीति दान दे—कृपा होती रहे, कृपा हो, कृपा हो।

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के श्रीमुखारविन्द से 11-4-1963 रात्रि 8-30 हरिद्वार साधना सत्संग के प्रवचन जो परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज द्वारा डायरी में नोट किए गए)

'राम नाम मुद मंगलकारी'

परम सत्य, प्रकाश रूप, परम ज्ञानानन्दस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, अन्तर्यामी, एकैवाद्वितीय परमेश्वर, परमपुरुष, दयालु देवाधिदेव, परब्रह्म परमात्मा श्री राम को बार–बार नमस्कार, नमस्कार ! यह श्रुति–स्मृति से स्वतः सिद्ध है कि परमात्मा के रूप और नाम दोनों भगवत्स्वरूपगत हैं और अभिन्न हैं।

समुझत सरिस नाम अरु नामी।
प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी।

नाम रूप दुई ईस उपाधि।
अकथ अनादि सुसामुझि साधी।

इन नाम और रूप में कौन बड़ा है, कौन छोटा, यह कहना अपराध है। फिर भी संत सम्मति यही है कि

आनन्द कन्द चिद् घन अविनाशी,
राम नाम नामी सुख-रासी।

कहऊँ नामु बड़ ब्रह्म राम तें,
निज विचार अनुसार।

अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी,
उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी।

राम–नाम महामन्त्र है। इस नाम की शक्ति साधक को भगवान् के साक्षात् दर्शन कराकर, उनसे तथा आत्मस्वरूप संसार से एकता करा सकती है। इस नाम की महिमा से तो असम्भव भी सम्भव हो जाता है। चारों वेदों का सार–रूप 'राम–नाम' अमृत है जो जीवों के तीनों तापों का नाश करता है। राम–नाम मुद मंगलकारी व सर्वसुखकारी है, विघ्न–विनाशक व कल्याणकारी है। जिसके हृदय में राम–नाम की ज्योति ज्वलन्त हो जाती है, उसके संकट, संशय, विपदा, बाधा, शोक–चिन्ता, आधि–व्याधि व पाप–ताप वह प्रतिपालक, दीनदयाल सदा–सदा के लिए निर्मूल कर देता है। इसकी महिमा, बड़ाई कौन करे?

महिमा महा, सुनाम की
मुनिगण पाय न पार।

ज्ञानी ध्यानी योगीजन
गए कथन में हार।।

नाम–धन राशि एकत्रित होकर गाढ़ अविद्या का नाश कर सच्चा पूँजीपति बना देती है। गुरुजन नामदीक्षा द्वारा 'राम–नाम' व्यक्ति के अन्तःकरण में स्थापित करके, उसकी अज्ञानता का भेदन कर देते हैं, उस पर पड़े माया के आवरण को उठाकर उसकी चेतना

राम-नाम महामन्त्र है। इस नाम की शक्ति साधक को भगवान् के साक्षात् दर्शन कराकर, उनसे तथा आत्मस्वरूप संसार से एकता करा सकती है। इस नाम की महिमा से तो असम्भव भी सम्भव हो जाता है। चारों वेदों का सार-रूप 'राम-नाम' अमृत है जो जीवों के तीनों तापों का नाश करता है। राम-नाम मुद मंगलकारी व सर्वसुखकारी है, विघ्न-विनाशक व कल्याणकारी है।

को चैतन्य बना देते हैं।

तब 'राम–नाम' की औषध का सेवन करके साधक जन्म–मरण के रोग से मुक्त हो जाता है और अमल, अचल, निर्वाणपद को प्राप्त होता है।

दो वर्णों से युक्त 'राम' शब्द के अर्थ का विश्लेषण करते हुए ज्ञानी भक्तों ने स्पष्ट किया है कि 'रकार' अग्नि का मूल है। इससे मोहादि एवं शुभा–शुभ कर्म भस्म होते हैं। अज्ञानता–पापादि का नाश होता है। 'रकार' वैराग्य का कारण है–दिव्यरूप से शब्दादि विषयों से मन को हटाकर शुद्ध करता है अर्थात् वैराग्य द्वारा परलोक में और अग्नि द्वारा लोक में पोषण करता है। इसका अर्थ सगुण राम भी है जो ऐश्वर्य के समुद्र हैं। 'अकार' वेद शास्त्रादि का प्रकाश करके अविद्या का नाश करता है, ज्ञान का कारण है। 'अकार' ज्ञान द्वारा परलोक में और सूर्य प्रकाश द्वारा लोक को पालता है। राम और जीव के बीच सम्बन्ध जोड़ने वाली सीताजी हैं। 'मकार' त्रिताप हरकर शीतलता–शान्ति देता है, भक्ति का कारण है। यह भक्ति द्वारा परलोक में तथा चन्द्रमा द्वारा लोक का पालन करता है। इसका अर्थ जीव भी है जो सब प्रकार की सेवा करने में दक्ष है। इस प्रकार 'राम–नाम' से लोक में लाभ और परलोक में सुखद निर्वाह होता है। ब्रह्मलीन स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने तभी तो लिखा कि

रा मुख से उच्चारते,
पाप बहिः सब जाय।

फिर भीतर आवे नही,
म, कपाट हो आय।।

गोस्वामी तुलसीदास जी तो ब्रह्मा, विष्णु, महेश इन तीनों महादेवों की उपासना एक स्वरूप मानकर **'र आ म'** अक्षरों में स्थापित स्वीकारते थे। स्वामी रामदास तो ऐसा अनुभव करते कि इन दो अक्षरों

के अतिरिक्त, अन्य कोई दो अक्षर ऐसे नहीं जिनके युक्त होने से एक ऐसे शब्द की उत्पत्ति हो जिसकी उपासना भव–भय–भंजना हो, भवसागर तरानेवाली और विश्व भर में कल्याणकारिणी हो तथा जिसके उच्चारण मात्र से ऐसी ध्वनि गूँजे, ऐसा नाद उपजे जो इतना चित्ताकर्षक हो, मनमोहक हो और विक्षुब्ध मन को स्तब्धकर परमशान्ति दिलानेवाला हो जितना कि 'राम' शब्द। स्वामीजी का अनुभव भी ऐसा ही है

रा, धुन मूलाधार से,
जैवी शक्ति जगाय।

म, दसवें द्वार तक,
तभी उसे पहुँचाय।।

राम की सत्ता के बिना न तो कोई पत्ता हिलता है और न कोई फूल ही खिलता है और न ही उसकी प्रेरणा के बिना कोई परमाणु ही हिलने में समर्थ है। तभी तो संत गाते हैं

तेरी महिमा का प्रभु,
कोई न पाया पार।

आदि अन्त से रहित तू,
लीला-रूप अपार।।

भगवान् शिव भी इस तथ्य को स्वीकारते हुए माँ भवानी से कहते हैं–''हे देवी ! राम के अद्‌भुत अर्थ को श्री राम ही पूर्ण रूप से जानते हैं, कुछ–कुछ मैं उन्हीं की कृपा से जानता हूँ।''

राम की सत्ता के बिना न तो कोई पत्ता हिलता है और न कोई फूल ही खिलता है और न ही उसकी प्रेरणा के बिना कोई परमाणु ही हिलने में समर्थ है।

उक्त कथनों से यही संकेत प्राप्त होते हैं कि राम शब्द के अर्थ और राम की महिमा समझने में हम सर्वथा असमर्थ हैं और जो भी ज्ञान उपलब्ध होगा वह केवल राम–कृपा से। उसकी कृपा पाने के लिए संत, 'राम–नाम' का जाप, चिन्तन व संकीर्तन बड़ी भावना और भक्तिपूर्वक करते रहने के संकेत व आदेश देते हैं। भगवान स्वयं भी कहते हैं, ''इस संसार में जो जन श्रद्धापूर्वक मेरे नामों का जप–कीर्तन करते हैं, मैं उनके करोड़ों अपराधों को क्षमा कर देता हूँ, इसमें कोई संदेह नहीं''।

नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू।
भगत सिरोमनि भे प्रहलादू।।

सुमिरि पवन सुत पावन नामू।
अपने बस करि राखे रामू।।

'राम नाम' जपना, परमेश्वर को आह्वान करना कहा गया है। इससे अपने परमेष्ट देव की सन्निधि स्वयंमेव प्राप्त हो जाती है और अभीष्ट प्राप्ति भी। साधनायुक्त व्यक्ति अपने इष्टदेव का नाम देवरूप ही समझकर स्मरण करे। ऐसी भावना से जाप करते हुए, उसमें लीनता, सुलभ और शीघ्र हो जाती है। उस अवस्था में पथ–प्रदर्शन आप–ही–आप होने लग जाता है। संत शैली में नामोपासना एक रहस्यवाद है। आराधना का ऊपर का स्वरूप तो नाम की रटन ही है; परन्तु उसके अन्दर योग की सम्पूर्ण सामग्री इसी भाँति निहित है जैसे बीज में वृक्ष। इस उपासना में अन्य बिन्दुओं को हृदयंगम करने की आवश्यकता पर बल देते हुए एक मुनि ने एक जिज्ञासु स्त्री को समझाया कि त्रिकुटी स्थान में 'राम शब्द' का ध्यान किया करो और उसी मधुरतम नाम का मुख से अथवा मन से स्मरण करती रहो, यह आत्मकल्याण का सुगम साधन है। इस साधना द्वारा, परमेश्वर कृपा से तेरा बेड़ा पार अवश्य होगा। जो नारायण, निराकार, निरंजन और अन्तर्यामी है वही संत सम्मति में 'राम' है। जिस अनन्त् सत्–चित्–आनन्द परमात्मा में योगीजन रमण करते हैं, जो सब जीवों में, चल–अचल में सर्व–अन्तर्यामी रूप से व्याप्त है, संत–महात्मा सदैव जिसका ध्यान धरते हैं, वही परब्रह्म परमात्मा 'राम' है। उसी 'राम' को इष्ट, उपास्य, आराध्य, स्मरणीय, चिन्तनीय, जपनीय मानकर अनन्य रूप से 'राम–नाम' की उपासना करना पुण्योदयकारक, मंगलकारक, परमशुभ और मुक्तिदायक है। गोस्वामी तुलसीदास, सुसंत रामानन्द, महात्मा कबीर, गुरु नानक देव, समर्थ गुरु रामदास व अनेक सत्पुरुषों की सम्पूर्ण वाणी में 'राम–नाम' का ही एक मात्र रस अलौकिक छटा से सुशोभित है। उनके जीवन में नाम स्मरण की महत्ता चरम सीमा को स्पर्श करती बिल्कुल वैसी ही दीख पड़ती है जैसे आधुनिक संतों स्वामी सत्यानन्दजी व रामदासजी के जीवन में। इन महापुरुषों की स्थिति ऐसी थी कि

राम जपा मन लगन से,
रात-दिवस सब याम।

अब तो राम भजे मुझे,
मुझको मिले विश्राम।।

जो परमशान्ति इन्हें लाभ हुई, जो परमगति इन्हें प्राप्त हुई, इन्हीं उपलब्धियों का सेवन कर वह हमें समय–समय पर चेतन करते रहते हैं

कहु नानक सोई नर सुखिया,
राम नाम गुण गावै।

और सकल जग माया मोहिया,
निर्भयपद नहिं पावै।।

राम–नाम गुण–गान को, हरि–कीर्तन–भजन को संत जन, अन्तःकरण को कोमल व विमल बनाने का बड़ा प्रभाव–जनक व ऊँचा हेतु बताते हैं।

राम–नाम का जप कितना हो ? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए स्वामी रामदास हमारा मार्गदर्शन करते हुए दर्शाते हैं जहाँ ''श्री राम जय राम जय जय राम'' मन्त्र का तेरह करोड़ जप, राम का साक्षात्कार करवाता है, ''ॐ श्री राम जै राम जै जै राम'' छह करोड़ की संख्या में ही पर्याप्त हैं। अन्य संतों ने नाम–जप की न ही कोई अधिकतम संख्या ही निर्धारित करी और न ही कोई साक्षात्कार की अवधि। हाँ, इतना अवश्य कहा है कि जप की न्यूनतम संख्या, जितने मनुष्य प्रतिदिन साँस लेता, छोड़ता है, उतनी तो अवश्य होनी ही चाहिए। अतः 20–21 हजार बार मंत्र जप प्रतिदिन अवश्य हो। उक्त वर्णित मंत्रों में राम शब्द तीन अथवा चार–बार (ॐ व राम सम माने जाते हैं) अंकित है। सैद्धान्तिक दृष्टि से इस गणना के अनुसार केवल 'राम'–'राम' जपनेवालों को लगभग 33 करोड़ जप करने की आवश्यकता है। यदि सामान्य व्यक्ति प्रतिदिन बीस हजार जाप करे, तो इस राशि को पूर्ण होने में लगभग 16,500 दिन अर्थात 45 वर्ष लगेंगे जो एक लम्बी अवधि है। जाप के अतिरिक्त मनुष्य अपने जीवन काल में विभिन्न शुभ कर्म भी करता है और कोई भी सत्कर्म व्यर्थ नहीं जाता और न ही उसमें लगाया समय। ऐसे उत्तम कर्म की तुलना, जाप की किस संख्या से की जाती है, इस गणित को तो राम ही जानें। यह तो निश्चित है ही कि उसमें 'राम–नाम' धन में वृद्धि अवश्य होती है और साधक लक्ष्य के समीप पहुँचने लगता है। फिर यह भी स्वाभाविक ही है कि दुष्कर्मों व पाप–कर्मों से यह धन लुटता भी होगा। इस पथ के पथिकों को प्रभु–प्रेम का अतुल्य स्थान समझाते हुए किसी ने सत्य कहा है कि प्रेमाश्रु की दो बूँदें बाढ़ के वेग में बहती नदी अथवा आवेश में आए सागर की भाँति, जन्म–जन्म के कुसंस्कारों को व पापरूपी मल को बहा ले जाने में पर्याप्त हैं। ऐसे स्नेह भरे भावों से उसके साक्षात्कार में कितने ही काल की कमी होती होगी,राम ही जानें। राम भक्त का प्रेम मछली के प्रेम तुल्य हो जाए,जिसकी प्रशंसा करते संत अघाते नहीं तो राम–प्रेम पयोधि में डूबे हुए भक्त को न संख्या की चिन्ता और न ही अवधि की।

परा प्रीति हो राम में,
तन्मय हो लौ लाय।

रीझ प्रेम से आप ही,
कभी मिलेगा आय।।

'राम–नाम' जप में सब का समान अधिकार है—स्त्री हो या पुरुष, बच्चा हो या बूढ़ा, ब्राह्मण हो या शूद्र, भारतीय हो अथवा विदेशी, शुद्ध या अशुद्ध अवस्था में, बिना किसी विधि–विधान के भी 'राम–नाम' जपा जा सकता है। राम–नामोपासना में कोई साक्षर हो या निपट निरक्षर, मानव हो या पशु–पक्षी, धर्मात्मा हो अथवा पतित, नाम–स्मरण का फल सर्वत्र प्रत्यक्ष है।

अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ।
भए मुकुत हरि नाम प्रभाऊ।

कहौ कहाँ लगि नाम बड़ाई।
राम न सकहिं नाम गुन गाई।।

'राम-नाम' चिन्तामणि है, अभय पद प्रदान करता है तथा सब पापों के सर्वनाश की एक अमोघ दवा है।

'राम–नाम' चिन्तामणि है, अभय पद प्रदान करता है तथा सब पापों के सर्वनाश की एक अमोघ दवा है। यह सांत्वना से ओत–प्रोत, प्रोत्साहनप्रद शब्द जहाँ दीन–दयालु सर्वेश्वर की दया, करुणा, कृपा व वात्सल्य के परिचायक हैं वहाँ भक्त की आर्तता व प्रेममयी आन्तरिक पुकार व तड़प के भी संकेत तथा संदेश देते हैं। राम–भक्त को तो परमेश्वर की असीम कृपा को सर्वोपरि मानकर, अपना सर्वस्व 'श्री राम' की चरण–शरण में समर्पित कर देना चाहिए। उसकी कृपा से ही उसमें परमविश्वास, श्रद्धा व उसके मँगलमय स्वरूप में प्रीति की वृद्धि होती है। उसकी कृपा की पात्रता अर्थात् सब कुछ उसकी अहेतुकी कृपा से ही उपलब्ध होता है। केवल मद, मोह तथा विविध छल–कपट त्याग कर शरणागत होने की आवश्यकता है, पूर्णतया 'राम' पर निर्भर होने की आवश्यकता है। ऐसे सज्जनों का राम–हृदय में वास होता है।

(नोट—समस्त पद्य गोस्वामी तुलसीदास जी, स्वामी सत्यानन्द जी व गुरु नानकदेव जी के हैं।)

विश्वामित्र

(मूलतः 'आनन्द बोध' में अप्रेल 1990 में प्रकाशित)

राम नाम की साधना

साधकों के मार्गदर्शन के लिए परम पूजनीय श्री महाराज जी ने प्रायः अपने प्रवचनों में राम नाम की महत्ता एवं साधना पर विशेष बल दिया है। निम्न पंक्तियों में इस विषय पर उनके प्रवचनों का सार प्रस्तुत है।

नाम मंत्र की महिमा।

जिसको नाम मंत्र मिलता है, वह मनुष्य जब तक जीवित रहता है, तब तक वह मंत्र(राम) उसके अन्तर में वास करता है। नामी तो नाम में बसता है। गुरुजन व सच्चे संत जब नाम देते हैं, तो वे अपनी शक्ति से शिष्य के अन्तःकरण में नाम के बीज को बो देते हैं। ऐसे में, वह मनुष्य ही राम नाम का मन्दिर बन जाता है, उसके लिए ईंट व पत्थर की आवश्यकता नहीं। संत तो बिना किसी भेदभाव के नाम बाँटते हैं। (झाबुआ के आदिवासियों ने व इन्दौर सैंट्रल जेल के कैदियों ने स्वयं को राम नाम का मन्दिर बन कर दिखाया है)

दीक्षा उपरान्त राम नाम को चेतन रखने का प्रयास।

हमें यह पूर्ण विश्वास हो कि हममें जो नाम का बीज बोआ जा चुका है, वह स्वयं हमें लक्ष्य स्थान पर ले जाएगा। हमें पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि नाम में ही नामी है और नाम द्वारा हम उसका आराधन करते हैं। ऐसा विश्वास लाभदायक होता है। जिसका नाम जपा जा रहा है वह हमसे दूर नहीं है। वह शब्द से अधिक समीप है, वह सर्वव्यापी है, यह विचार ही हमें परमेश्वर की अन्तःकरण में उपस्थिति का भान कराता है।

संसार में रहते हुए राम नाम को सतत् अनुभव करने की कठिनता।

राम नाम को अमृत की गोली (nectar in pill) कहा जाता है। मुँह में रखते ही दिव्यता का संचार होता है। राम नाम का माधुर्य (रस) अति मीठा है, यदि आपको मीठा नहीं लगता तो समझ लो कि आपका मन बिगड़ा हुआ है। जिसको पित्त का बुखार होता है उसको मिश्री कड़वी लगती है। पर जैसे–जैसे वासना (पित्त) का बुखार ठीक होने लगता है तो मिश्री मीठी लगने लगती है। परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज कहते कि मन लगे न लगे, निर्धारित जाप पूरा करके ही उठो, मन लगना शुरु हो जाएगा। राम नाम में इतना सामर्थ्य है कि आप जपते रहोगे तो बिगड़ा हुआ मन सुधर जाएगा। आवश्यकता है धैर्य की एवं विश्वास की।

मन को जप में लगाने का उपाय।

सतत् स्मरण ही जीवन में ठहराव लाता है, constant remembrance अर्थात् सतत् स्मरण ही चंचल मन को विश्राम देता है। जो विश्राम दे, प्रेम दे, वह 'राम'। प्रेम का दाता है 'राम'। राम के आने पर आराम मिलता है। 'आ राम' आराम–अति सुन्दर शब्द। परमात्मा को याद करने के लिए दृढ़ संकल्प लीजिए – नित्य सुबह–शाम ध्यान के लिए बैठना है। मन लगे, न लगे ज़रुर बैठना है। दिन का समय परमात्मा के स्मरण एवं नाम जाप के लिए व्यतीत किया है तो शाम का ध्यान अच्छा लगेगा। रात अच्छी बीती तो सुबह का ध्यान अच्छा लगेगा। कोई भी कारण हो जाए, साधन में अन्तर नहीं डालना चाहिए। अन्तर डालने का अर्थ है, साधन को गौण मानना और भगवान् की अवज्ञा करना, इससे साधना में उन्नति रुक जाती है।

राम नाम, चिन्ताचूरक।

माला फेरते ही संसार को याद करते हो, तो चिन्ताएँ कैसे मिटेंगी? हमने कभी चिन्ताचूरक को याद ही नहीं किया। केवल उसको याद करने से चिन्ताएँ मिटती हैं। परमेश्वर का स्मरण सब से बड़ी सम्पत्ति और परमेश्वर का विस्मरण सबसे बड़ी विपत्ति है। राम जी ने अपने मुखारविन्द से कहा, 'मैं माला घुमानेवालों को भक्त नहीं मानता। जो मेरे सिद्धान्तों का पालन करते हैं और सत्कर्म करते हैं, उनको भक्त मानता हूँ।' प्रेमपूर्वक भाव से किया हुआ जाप व सत्कर्मों का समन्वय होना चाहिए। तब जाकर जीवन में स्थिरता आती है और आप चिन्ता मुक्त होते हैं। 'परमात्मा का सतत् स्मरण व संसार का विस्मरण 'ध्यान' है, this is the simplest definition of Meditation."

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

अक्तूबर से दिसम्बर 2013

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

हरिद्वार में 30 सितम्बर से 3 अक्तूबर तक साधना सत्संग हुआ जिसमें 113 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

हरिद्वार में 4 से 13 अक्तूबर तक रामायणी सत्संग हुआ।

जम्मू में 18 से 20 अक्तूबर तक खुला सत्संग हुआ, जिसमें 300 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

रतनगढ़, राजस्थान, में 26 एवं 27 अक्तूबर को खुला सत्संग हुआ।

झाबुआ, मध्यप्रदेश, में 9 एवं 10 नवम्बर को खुला सत्संग हुआ जिसमें 2894 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। वर्ष 2013 में झाबुआ में कुल दीक्षा 21549 हुई। वर्ष 2012–13 में झाबुआ, म.प्र. केन्द्र को रु. 7,06,261 तथा 1.4.13 से 15.12.13 तक रु. 3,40,485 का साहित्य, चित्र व माला आदि का विक्रय किया गया।

हरिद्वार में 11 से 14 नवम्बर तक साधना सत्संग हुआ जिसमें 20 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

कपूरथला, फाज़लपुर, पंजाब, में 16 एवं 17 नवम्बर को खुला सत्संग हुआ जिसमें 302 साधक सम्मिलित हुए और 127 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

सुजानपुर, पंजाब, में 23 एवं 24 नवम्बर को खुला सत्संग हुआ जिसमें 122 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

ज्वाली, हिमाचल प्रदेश, में 1 दिसम्बर को श्री अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् नाम दीक्षा का आयोजन हुआ जिसमें 738 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

रतनगढ़, राजस्थान, में 5 दिसम्बर को 905 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

पठानकोट, पंजाब, में 7 एवं 8 दिसम्बर को खुला सत्संग हुआ जिसमें 440 साधक सम्मिलित हुए और 123 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

उज्जैन, मध्यप्रदेश, जेल में 8 दिसम्बर को नाम दीक्षा का आयोजन हुआ जिसमें 98 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

उज्जैन, मध्यप्रदेश, में 9 दिसम्बर को श्री अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् नाम दीक्षा का आयोजन हुआ जिसमें 378 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

भिवानी, हरियाणा, में 14 एवं 15 दिसम्बर को खुला सत्संग हुआ जिसमें 41 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

होशंगाबाद, मध्यप्रदेश, में 15 दिसम्बर को नाम दीक्षा का आयोजन हुआ जिसमें 1022 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

रोहतक, हरियाणा, में 21 एवं 22 दिसम्बर को खुला सत्संग हुआ।

दिल्ली में 149 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

दिल्ली में 29 व 30 दिसम्बर को खुले सत्संग का आयोजन किया जा रहा है।

दिल्ली में नव वर्ष के उपलक्ष्य में, 31 दिसम्बर को प्रातः 7.40 बजे श्री रामायण जी के पाठ का शुभारम्भ होगा जिसकी पूर्ति नव वर्ष 1 जनवरी 2014 को प्रातः 8.15 बजे होगी।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् भवनों की प्रगति

देवास, मध्यप्रदेश, में नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्‌घाटन 12 फरवरी 2014 को होगा। उद्‌घाटन समारोह के बाद नाम दीक्षा भी होगी।

जबलपुर, मध्यप्रदेश, में नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्‌घाटन 12 मार्च 2014 को होगा। उद्‌घाटन समारोह के बाद नाम दीक्षा भी होगी।

पीलीबंगा, जिला हनुमानगढ़, राजस्थान, में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है।

नरोट मेहरा, पंजाब, में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

रतनगढ़, राजस्थान, में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

फाज़लपुर, कपूरथला, पंजाब, में श्रीरामशरणम् में हो रहे निर्माण का लैंटर डाल दिया गया है।

श्रीरामशरणम् नई दिल्ली नाम दीक्षा की तिथियाँ

जनवरी से मार्च 2014

19 जनवरी	रविवार	प्रातः	11.00 बजे
2 फरवरी	रविवार	प्रातः	11.00 बजे
16 मार्च	रविवार	प्रातः	11.00 बजे

पूर्णिमा की तिथियाँ

जनवरी से मार्च 2014

16 जनवरी	बृहस्पतिवार
14 फरवरी	शुक्रवार
16 मार्च	रविवार

अन्य केन्द्रों पर नाम दीक्षा की तिथियाँ

जनवरी से मार्च 2014

5 जनवरी	रविवार	श्रीरामशरणम् हाँसी, हरियाणा
10 जनवरी	शुक्रवार	श्रीरामशरणम् झाबुआ, म.प्र.
22 जनवरी	बुधवार	श्रीरामशरणम् बानमोर, म.प्र.
26 जनवरी	रविवार	श्रीरामशरणम् ग्वालियर,म.प्र.
9 फरवरी	रविवार	श्रीरामशरणम् रोहतक, हरियाणा
12 फरवरी	बुधवार	श्रीरामशरणम् देवास, म.प्र.
16 फरवरी	रविवार	श्रीरामशरणम् इन्दौर, म.प्र.
23 फरवरी	रविवार	श्रीरामशरणम् बिलासपुर, हि.प्र.
2 मार्च	रविवार	श्रीरामशरणम् फाज़लपुर, पंजाब
12 मार्च	बुधवार	श्रीरामशरणम् जबलपुर, म.प्र.
30 मार्च	रविवार	श्रीरामशरणम् सिरसा, हरियाणा

अनुभूतियाँ

'परम पूजनीय श्री महाराज जी की गोद में'

'परम पूजनीय महाराज जी ने हमें कैसे सम्भाला है, हमने वास्तविक जीवन में देखा है। जीवन में जो जो भी दु:ख आए, अपनी शरण में बिठा कर कैसे कटवा दिए, हमें महसूस भी नहीं होने दिया। इतनी बड़ी घटना घट जाए और पता भी न चलने दें, कभी नहीं सोचा था। हमारी एक बेटी और एक बेटा था। दोनों किसी काम से छुट्टियों में स्कूल जा रहे थे, रास्ते में ऐक्सीडेंट हो गया। मैं घर से परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज का चित्र उठा कर हस्पताल पहुँची। डॉक्टर ने मुझे घर वापिस भेज दिया, मैं घर आ कर मन्दिर में बैठ गई। बेटी भी आ गई। बेटे की डैथ डॉक्टर ने declare कर दी, उसके पापा हस्पताल में थे। परम पूजनीय महाराज जी की कृपा से उन्होंने हमारी आँखों से एक आँसू भी नहीं निकलने दिया। परम पूजनीय महाराज जी ने इतना सम्भाल लिया। बेटी आई मेरी गोद में बैठ गई। मन्दिर में बैठे थे, कहने लगी,'ममा आप ही कहते थे कि आप महाराज जी के बच्चे हो, महाराज जी के पास भाई चला गया। वह पढ़ लिख कर आएगा, आप रोना मत।' हम 4–5 घण्टे मन्दिर में बैठे रहे। सब आ जा रहे थे, अपने–अपने स्वभाव के अनुसार बातें कर रहे थे। लेकिन महाराज जी की कृपा, जब बेटे को हस्पताल से लेकर आए, सब लोगों ने मुझे और बेटी को नीचे जाने को कहा, पर हम तो डैथ भी नहीं कहते और डैड बॉडी भी नहीं कहते, हम तो समझते हैं महाराज जी का बच्चा था, और उनकी गोद में चला गया और हमें वह महाराज जी की गोद में बैठा नज़र आता है। परमात्मा की कृपा से इतने भारी दु:ख से उन्होंने हमें उबार लिया।'

'सचमुच अकारण कृपा करने वाले हैं हमारे सत्‌गुरु'

'एक घरेलू महिला हूं, 13 वर्ष पहले नाम दीक्षा ली थी। पग–पग पर गुरुदेव को महसूस करती हूँ। कुछ वर्ष पहले की बात है, हम सारा परिवार भगवान विश्वनाथ जी के दर्शन करने काशी गए, काशी में 2–3 दिन रह कर, हम प्रयागराज आ गए, वहाँ होटल के कमरे में रुके थे। रात को भोजन के बाद हम सब बैठ कर टी.वी. देख रहे थे, मेरी बेटी उस वक्त दो वर्ष की थी। अचानक खेलते–खेलते बच्ची टी.वी. की ट्रॉली पर चढ़ गई और टी.वी. उसके ऊपर गिर गया। वह जमीन पर बेहोश हो कर गिर गई, उसकी नाक से खून बह रहा था। हम बहुत घबरा गए, रात के दस

बजे थे। हम उसे तुरन्त अस्पताल ले गए। मैंने देखा कि उसका सिर कान के पास से काफी अन्दर को धंस गया। हमने उसका सी.टी स्कैन करवाया, डॉक्टर ने बताया कि ऑप्रेशन की आवश्यकता नहीं। दवाइयों से ठीक हो जाएगी। रात को तीन चार बजे मैंने देखा उसका सिर चोट वाली जगह से बहुत सूज गया और बिल्कुल टेढ़ा हो गया। मैं मन ही मन घबरा गई, सोचा अगर हमेशा के लिए सिर ऐसा हो गया तो इसके भविष्य का क्या होगा, क्या ऐसी भी कोई दवा होगी जिससे सिर गोल हो जाए? तब मैंने हाथ जोड़ कर परम पूजनीय महाराज जी से प्रार्थना की, कि मेरी बेटी को ठीक कर दो, आपके सिवा, इसे कोई ठीक नहीं कर सकता। तभी रोते–रोते मेरी आँख लग गई और मैंने देखा परम पूजनीय महाराज जी आए और जैसे हलवाई लड्डू को दोनों हाथों से गोल कर देता है ऐसे ही उन्होंने मेरी बेटी के सिर पर दोनों हाथों को फेर कर एक दम गोल कर दिया। मैं चौंक कर जाग गई, उठकर देखा तो मेरी बेटी का सिर बिल्कुल ठीक हो गया, जैसा चोट से पहले था। हम कोई विशेष जाप पाठ नहीं करते फिर भी गुरु जी मेरी सहायता के लिए प्रयाग तक आए, सचमुच अकारण कृपा करने वाले हैं हमारे सत्गुरु! ■

बच्चों के लिए

'पूर्ण विश्वास से चमत्कार'

एक ग्वालिन, एक पण्डित जी के यहाँ दूध पहुँचाया करती थी। ग्वालिन का घर नदी के पार था। समय पर, नाव न मिलने के कारण उसे दूध लाने में देर हो जाया करती थी। एक दिन देरी के कारण पण्डित जी ने उसे बहुत फटकारा। ग्वालिन ने कहा,'क्या करूँ पण्डित जी मेरे वश में नहीं। मैं तो घर से जल्दी निकलती हूँ, पर मल्लाह व मुसाफिरों के लिए मुझे देर तक बैठे रहना पड़ता है।' पण्डित बोले,'अरी ! 'राम–नाम' लेकर लोग भव सागर पार हो जाते हैं और तू छोटी सी नदी को पार नहीं कर सकती।' बेचारी भोली–भाली थी। पण्डित जी की बात सुन कर बहुत प्रसन्न हुई। दूसरे दिन से वह नाव के लिए राह न देख, विश्वास के साथ राम नाम लेते हुए पैरों से चल कर नदी पार करने लगी। एक दिन पण्डित जी ने उससे पूछा,'क्या बात है, आजकल तुझे देर नहीं होती?' ग्वालिन ने कहा, 'पण्डित जी ! तुम्हारी बात सुनकर मैं अब नाव के लिए इंतज़ार नहीं करती, 'राम नाम' लेते हुए पैदल ही नदी पार कर आती हूँ।' पण्डित जी को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने कहा,'तू मुझे चलकर नदी पार करके दिखा सकती है?' वह पण्डित जी को साथ ले गई और नदी में उतर कर राम नाम लेते हुए चलने लगी। पण्डित जी घबराते हुए, पानी में उतरे और धोती को सम्भालते हुए बड़ी कठिनता से एक दो पग आगे बढ़े। ग्वालिन ने थोड़ी दूर जाकर, जब पीछे मुड़कर पण्डित जी की दुर्दशा देखी तो कहा,'वाह महाराज ! आप मुख से राम नाम भी लोगे और हाथों से धोती भी सम्भालोगे– यह कैसे चलेगा !' **भगवान पर पूरे विश्वास के साथ समर्पण करो, तभी काम बनेगा।** ■

लख लख बधाई !

समस्त साधकगणों को परम पूजनीय श्री महाराज जी के अवतरण-जन्म दिवस पर लख लख बधाई !

श्री रामशरणम् दिल्ली में जन्म दिवस व होली के सुअवसर पर 15 से 17 मार्च 2014 को खुले सत्संग का आयोजन किया गया है।

परम पूजनीय श्री महाराज जी हाँसी में अपने 70 वें जन्मदिवस के अवसर पर

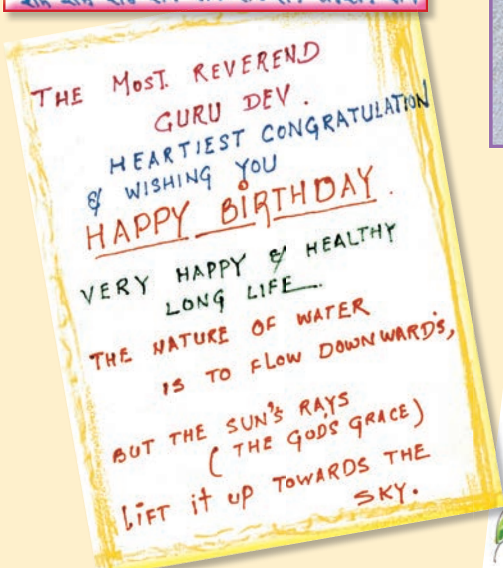

परम पूजनीय श्री महाराज जी के जन्मदिवस पर उनको बच्चों द्वारा दिए गए कुछ कार्ड (पृ 12 व 13)

परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के संस्मरण

1954 की बात है–एक बार स्वामी जी महाराज ने अपनी घड़ी 15 मिनट आगे कर ली और स्वयं ही घंटी बजा कर हॉल में बैठ गए–सारी बैठकें दिन भर उसी अनुसार हुईं। कुछ एक सज्जनों ने देखा कि स्वामी जी की घड़ी 15 मिनट आगे है, परन्तु चुप रहे। विनोद सभा में एक सज्जन ने कहा, 'स्वामी जी क्षमा करें–आप तो अपने आपको बच्चा ही कहते हैं, परन्तु आपकी घड़ी बूढ़ी हो गई है।' स्वामी जी हँस पड़े। उसके बाद अपने प्रवचन में उन्होंने फरमाया, 'मैंने स्वयं अपनी घड़ी 15 मिनट आगे करी थी। मुझे प्रसन्नता है कि आप सबने फिर भी अनुशासन में रहने का प्रयत्न किया–सब समय पर ही इकट्ठे हो गए–यही तो मैं देखना चाहता था।'

(परम पूजनीय महाराज जी की डायरी में से)

वर्ष 2014 में होने वाले साधना सत्संगों एवं खुले सत्संगों की सूची

साधना-सत्संग

1	हांसी	3 से 6 जनवरी	शुक्रवार से सोमवार
2	ग्वालियर	24 से 27 जनवरी	शुक्रवार से सोमवार
3	हरिद्वार	11 से 16 अप्रेल	शुक्रवार से बुधवार
4	हरिद्वार	30 जून से 3 जुलाई	सोमवार से बृहस्पतिवार
5	हरिद्वार	7 से 12 जुलाई	सोमवार से शनिवार
6	हरिद्वार, रामायणी	24 सितम्बर से 3 अक्तूबर	बुधवार से शुक्रवार
7	हरिद्वार	11 से 14 नवम्बर	मंगलवार से शुक्रवार

खुले सत्संग

1	झाबुआ	11 से 13 जनवरी	शनिवार से सोमवार
2	देवास	12 फरवरी	बुधवार
3	इन्दौर	14 से 16 फरवरी	शुक्रवार से रविवार
4	बिलासपुर	21 से 23 फरवरी	शुक्रवार से रविवार
5	फाज़लपुर, कपूरथला	1 से 2 मार्च	शनिवार व रविवार
6	दिल्ली होली	15 से 17 मार्च	शनिवार से सोमवार
7	सिरसा	28 से 30 मार्च	शुक्रवार से रविवार
8	रोहतक	5 से 6 अप्रैल	शनिवार व रविवार
9	सूवा, फीज़ी	3 से 4 मई	शनिवार व रविवार
10	सिडनी, ऑस्ट्रेलिया	9 से 11 मई	शुक्रवार से रविवार
11	अमेरिका	जून (तिथियाँ प्रेषित की जाएँगी)	
12	मनाली	15 से 16 जून	रविवार व सोमवार
13	दिल्ली	27 से 29 जुलाई	रविवार से मंगलवार
14	सूरत	23 से 24 अगस्त	शनिवार व रविवार
15	रतनगढ	6 से 7 सितम्बर	शनिवार व रविवार
16	रिवाड़ी	13 से 14 सितम्बर	शनिवार व रविवार
17	गुरदासपुर	19 से 21 सितम्बर	शुक्रवार से रविवार
18	जम्मू	17 से 19 अक्तूबर	शुक्रवार से रविवार
19	फाज़लपुर, कपूरथला	22 से 23 नवम्बर	शनिवार व रविवार
20	पठानकोट	13 से 14 दिसम्बर	शनिवार व रविवार
21	रोहतक	20 से 21 दिसम्बर	शनिवार व रविवार
22	दिल्ली	29 से 30 दिसम्बर	सोमवार व मंगलवार

(ग्वालियर, हाँसी के साधना सत्संगों तथा खुले सत्संगों में सम्मिलित होने के लिए इच्छुक साधक कृपया स्थानीय प्रबन्धकों से सम्पर्क करें।)

‘सत्य साहित्य’ के उद्देश्य और नियम

उद्देश्य

1. ‘सत्य साहित्य’ का मुख्य उद्देश्य श्री स्वामी सत्यानंद जी महाराज के लोक कल्याणकारी साहित्य का व्याख्यात्मक शैली से प्रकाशन करना है।
2. ‘सत्य साहित्य’ का दूसरा उद्देश्य है उस साधना पद्धति का प्रचार और प्रसार करना जो सच्ची और सरल है, वेदशास्त्र सम्मत है और भावुक साधकों के अनुभव में आ चुकी है।

नियम

1. ‘सत्य साहित्य’ हर तीन माह में प्रकाशित होगा।
2. ‘सत्य साहित्य’ में स्वामी श्री सत्यानंद जी महाराज, परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज एवं परम पूज्य महाराज जी के प्रकाशित व अप्रकाशित साहित्य से सम्बन्धित विचार प्रकाशित होंगे।
3. ‘सत्य साहित्य’ के ‘अनुभूतियाँ’ विभाग में गुरुजनों के सम्पर्क या परिचय में आए हुए साधकों के अपने अनुभव प्रकाशित होंगे।
4. ‘सत्य साहित्य’ के ‘पत्र और उत्तर’ विभाग में साधकों के पत्र और उनके उत्तर उनके पत्रों के आधार पर प्रकाशित होंगे।
5. ‘सत्य साहित्य’ में गुरुजनों के साहित्य और सिद्धान्तों से सम्बन्ध रखने वाली कविताएँ, गीत आदि भी प्रकाशित हो सकेंगे।
6. ‘सत्य साहित्य’ में प्रकाशनार्थ आई हुई सामग्री को शीघ्र या विलम्ब से प्रकाशित करना श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली, के अधीन होगा।
7. आवश्यकतानुसार नियमों में परिवर्तन, परिवर्धन हो सकेगा, किन्तु ध्येय वही रहेगा जो इन नियमों से प्रकट है।

यदि आप ‘सत्य साहित्य’ की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

Published & edited for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, New Delhi, by Anil Dewan from
Shree Ramsharnam, 8A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 & printed by him
at Rave Scans Pvt. Ltd. from A-27 Naraina Ind. Area, Phase-II, N. Delhi-28 www.raveindiapress.com

©Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, New Delhi.
Email: shreeramsharnam@gmail.com; shreeramsharnam@hotmail.com
Website: www.shreeramsharnam.org

RNI No. “Applied for”.

Price ₹ 5